कामायनी महाकाव्य के चिंता और आशा सर्ग में मनु के मन में उदित भाव-चित्रों का सार प्रस्तुत करें।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर शीला के शीतल छांव में भींगे नेत्रों से प्रकृति के भयानक प्रलय दृश्य को देखकर मनु के मन में अपने स्वर्णीमअतीत, दुखमय वर्तमान और धुंधले भविष्य के विषय में चिंता की पहली रेखा का प्रस्फुटन होता है। मनु इस चिंता को हृदय गगन की धूमकेतु, अभाव की चप्पल बालिके, ललाट की खल रेखा , इस ग्रह कक्षा की तरल गरल की लघु लहरी ,आधि और व्याधि की सूत्र धारिणी आदि की संज्ञा देते हैं। मनु इस निष्कर्ष पर सोचते हैं कि बुद्धि, मनीषा, मति,आशा आदि चिंता के ही विभिन्न नाम हैं। यों तो मनु के मन में जैसे-जैसे अतीत की यादें गहरी होती जाती हैं वैसे -वैसे उनका दुख भी बढ़ते जाता है । क्योंकि बीते हुए सुख एवं समृद्धि की यादें चिंता को और अधिक बढ़ा देती है। मनु जितना ही अतीत की ओर लौटते हैं उनका दुख उतना ही अधिक बढ़ता जाता है। इसीलिए वे स्मृति के स्थान पर विस्मृति को तथा चेतनता के स्थान पर जड़ता को निमंत्रण देते हैं –

विस्मृति आ, अवसाद घेर ले, नीरवते ! बस चुप कर दे।

चेतनता चल जा, जड़ता से,आज शून्य मेरा भर दे।। -परन्तु दूसरे ही क्षण उन्हें अहसास होने लगता है कि यह चिन्ता इस सृष्टि में सुन्दर पाप या कहें मधुमय अभिशाप के समान है। क्योंकि बाह्य दृष्टि से चिन्ता का उदित होना भले ही अशुभ माना जाता है, किन्तु इसका परिणाम मंगलमय होता है। अर्थात् चिन्ता की सुन्दरता इस बात में निहित है कि इसकी उत्पत्ति के पश्चात ही व्यक्ति अपनी समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न करता है, जिसमें बुद्धि, मनीषा, मति तथा आशा अपनी-अपनी भूमिका निभाती हैं।

अमरता के अभिमानी देवों का विनाश हो चुका है। समस्त विलास -वैभव के छोटे-बड़े साधन समाप्त हो गये हैं। सुर बालाओं का वह श्रृंगार विलीन हो चुका है, जिसके द्वारा वे अपने-आप को हमेशा चिरकिशोर नव यौवना समझती थीं और मधुपों के सदृश्य मरंद उत्सव मनानेवाले विलासी देवगणों को अपनी ओरआकृष्ट करती थीं। वो सभी अपनी ही वासना की ज्वाला में जल गये।

कुछ देर के लिए मनु के मन में जल प्रलय का भयानक दृश्य उभरता है। मनु पंचभूत के इस भैरव रुप को देखकर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आज प्रकृति विकराल रुप धारणकर ताण्डव मचाने के लिए कटिबद्ध हो गई थी। और यह ताण्डव वैसे ही तीव्र से तीव्रतर होते जा रहा थी,जैसे कि अतीत में देवताओं के जीवन में वासना की वेग बढ़ा करती थी। भयंकर आँधी, मूसलाधार वारीस, बादलों के गड़गड़ाहट और बिजलियों की तड़तड़ाहट तथा व्योम चूमती समुद्र की लहरें कयामत ढ़ा रही थीं। चारो ओर भयावह दृश्य था । आज उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया था कि यह सारा जगत असत्य,अनित्य एवं नश्वर है, क्योंकि यहां कोलाहल चिरस्थाई नहीं अपितु मौन चिरस्थाई है, निर्माण चिरस्थाई नहीं अपितु विनाश चिरस्थाई है, सृजन चिरस्थाई नहीं अपितु विध्वंस चिरस्थाई है, प्रकाश चिरस्थाई नहीं अपितु अंधकार चिरस्थाई है, अस्तित्व चिरस्थाई नहीं अपितु अभाव चिरस्थाई है और अमरता की तो चर्चा करना ही व्यर्थ है –

मौन! नाश! विध्वंस ! अंधेरा ! शून्य बना जो प्रकट अभाव।
वही सत्य है अरी अमरते! तुमको यहाँ कहाँ अब ठाँव ।।

क्योंकि जगत की समस्त गतिविधियां अस्थिर एवं अस्थाई हैं। यहां तो केवल मृत्यु चिरस्थाई है, जो जीवों को अपनी गोद में बैठा कर शाश्वत शांति प्रदान करती है।

ऐसी ही निराशा, हतासा, एवं उदास वातावरण में आकस्मात सौर-मण्डल में परिवर्तन के चिह्न दिखाई देने लगे। घोर निराशा-रुपी अंधकार से आशा और उत्साह रुपी प्रकाश का उदय हुआ । अर्थात् प्रलय की भयंकर काल-रात्री को पराजित कर उषा की सुनहली किरणें विजय लक्ष्मी के रुप में उदित हुईं। यहीं से आशा सर्ग का आरम्भ होता है।

आशा सर्ग की संपूर्ण कथा वस्तु अनेक भाव चित्रों के गूंथन से निर्मित है। जिसमें प्रलय की ध्वंस- लीला के पश्चात नूतन सृष्टि की नैसर्गिक विकास प्रक्रिया का अंकन है, प्राकृतिक क्रियाकलापों के मूल में किसी रहस्यमयी सत्ता के अस्तित्व का बोध और उसकी अनंत रमणीयता की अनुभूति आदि प्रमुख हैं। साथ ही निराश मनु के हृदय में जीवन के प्रति आशा का जागृत होना, हिमालय के अनुपम वैभव का अलंकृत चित्रण, प्रकृति के मनोरम वातावरण में मनु के

संवेदनशील हृदय का किसी परिचित जीवनसाथी के अभाव में कचोटना तथा रात्री को अल्हड़वती अभिसारिका के रुप में मनोका रति को पर्वती अभिसारिका के रूप में कल्पित कर उससे अनेक प्रकार की वार्ता करना आदि कई रमणीय चित्रों के कलात्मक अंकन के द्वारा इस सर्ग के कथा सूत्रों का संगठन किया गया है।

कामायनी की संपूर्ण कथा वस्तु के विकास क्रम में इस आशा सर्ग का महत्वपूर्ण योग है ।श्रद्धा और मन का समन्वयहोने पर ही मान वता के इतिहास में उस युग का श्रीगणेश हुआ, जिसकी मननशीलता का आरंभ इस सर्ग में दिखाया गया है। श्रद्धा के अभाव का अनुभव भी मनु इसी सर्ग में करते हैं। जिस देव प्रवृत्ति के जगने पर मनु पाक- यज्ञ आरंभ करके असुर पुरोहित किलातऔर आकुली को पशु बलि करने का अवसर प्रदान करते हैं, उसका सूत्रपात भी इसी सर्ग में होता है ।पाक

यज्ञ करना निश्चित कर लगे शलियों को चुनने

जो इड़ा मनु के जीवन में अमूल्य परिवर्तन ला देती है उससे भी उनका संबंध इसी पाक- यज्ञ के कारण होता है, क्योंकि उसकी उत्पत्ति या पुष्टि पाक- यज्ञ से हुई थी। इस प्रकार ऐसी कई सूत्र -ग्रंथियां इस सर्ग में परिलक्षित की जा सकती हैं ,जिनके खुलने से आगे चलकर कामायनी के कथानक में महत्वपूर्ण मोड़ आ सके हैं।

●